नमस्कार

प्रदीप कुमार कुलश्रेष्ठ
निजी सचिव, महाप्रबन्धक (परिकल्प-सिविल)
टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड
ऋषिकेश-249201 जिला देहरादून, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड प्रदेश में जब हम आये थे तब हमने उसे सर्वप्रथम नमस्कार किया था क्योंकि मुझे मालूम था कि यह उत्तराखण्ड हमारे लिये और हमारे परिवार के लिए कुछ न कुछ करके जायेगी। आज उत्तराखण्ड भारत के मानचित्र पर एक नवोदित राज्य बनकर इतिहास में एक महत्वपूर्ण शहर है। टिहरी जिला, उत्तराखण्ड राज्य का एक हिस्सा है। आज से 35 वर्ष पहले टिहरी की परिस्थितियां बेहद चुनौतीपूर्ण थी। एक उजड़ते शहर से लाखों लोगों को नमस्कार करने के लिए मजबूर कर दिया। टिहरी बांध के प्रारम्भ से टिहरी शहर से हर रोज टिहरी में कोई न कोई मकान उजड़ रहा था। हर रोज कोई न कोई परिवार टिहरी छोड़कर नमस्कार करता हुआ जा रहा था। अर्थात् एक बसे हुए समाज में उथल-पुथल जैसे दुस्साहसपूर्ण कदम उठ चुके थे।

टिहरी बांध ने लेखक, सम्पादकों को लिखने एवं कलम उठाने के लिए मजबूर कर दिया था। एक तरफ तो टिहरी बांध विस्थापितों के मानवीय अधिकारों के लिए एक जन आन्दोलन जन्म ले रहा था। दूसरी तरफ भारत के मानचित्र पर सम्पूर्ण शहर के मिटने का काल अर्थात दोनों के लिए यह इतिहास का संक्रमणकाल था। टिहरी बांध के पुनर्वास लोगों के परिवार उजड़ गये, जिसके लिए टिहरी बांध ने उनके घावों पर मरहम लगाये। आज हम एक सामुदायिक जीवन को पहले ही तहस-नहस कर चुके हैं, जिनके पास थोड़ी बहुत जमा पूंजी है वे गांव में रहना पसंद नहीं कर रहे हैं गांव की पहचान खतरे में है। इसलिए पहाड़ का अस्तित्व भी खतरे में है।

हिमालय ने सदियों से न केवल भारत वर्ष बल्कि संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप को संरक्षण दिया है। यह प्रकृति का वरदान है। यह सीमा का प्रहरी है। यह प्रेरणास्त्रोत है। सौंदर्य का खजाना है। संस्कृति का मूल है, देवताओं का निवास है। गंगा-यमुना का उद्गम है। बदरी-केदार की भूमि है पेशावर काण्ड के महानायक की गढ़केसरी की, कूर्मांचल केसरी की जन्म व कर्मभूमि है।

संवैधानिक अधिकारों में सबसे कमजोर राज्य का गठन उत्तरांचल के रूप में हुआ है, जिसका न अपनी जमीन पर अधिकार है न पानी व परियोजनाओं पर, वनों पर भी अधिकार नहीं है। यह देवभूमि है। यहां की संस्कृति देव संस्कृति है। यह संस्कृति दैत्याचरण की अनुमति नहीं देती।

****